NC–952

Seat No. _____

Third Year B. A. Examination

April / May – 2003

Hindi : Paper – VIII

(साहित्यिक विधा : कविता)

(New Course)

Time : **3** Hours] [Total Marks : **70**

१ 'कुरुक्षेत्र' का काव्य–रूप निर्धारित कीजिए। १४

अथवा

१ 'कुरुक्षेत्र' काव्य के आधार पर भीष्म पितामह के चरित्रकी महिमा प्रतिपादित कीजिए। १४

२ 'महादेवी वर्मा की कविता में वेदना–भाव व्यक्त हुआ है' – इस कथन के आधार पर 'सान्ध्यगीत' काव्य–संग्रह की विवेचना कीजिए। १३

अथवा

२ 'मैं नीर भरी दुःख की बदली' का केन्द्रीय भाव सोदाहरण समझाइए। १३

३ 'सर्वेश्वर दयाल सक्सेना की कविताओं में व्यापक जनवादी चेतना और प्रगतिशील जीवन मूल्यों की अभिव्यक्ति हुई है' – प्रतिनिधि कविताएँ संग्रह के आधार पर इस कथन की समीक्षा कीजिए। १२

अथवा

३ 'सन्तवाणी' कविता के भाव–सौन्दर्य को सोदाहरण प्रकट कीजिए। १२

४ किन्हीं **दो** पर टिप्पणियाँ लिखिए : १२

(क) 'कुरुक्षेत्र' का शीर्षक

(ख) 'कुरुक्षेत्र' की भाषा–शैली

(ग) 'शलभ मैं शापमय वर हूँ' कविता का उद्देश्य

(घ) सर्वेश्वर दयाल सक्सेना की प्रतीक–योजना।

५ सन्दर्भ सहित व्याख्या कीजिए : १८

(अ) एक ओर सत्यमयी गीता भगवान की है,

एक ओर जीवन की विरति प्रबुद्ध है,

जानता हूँ, लड़ना पड़ा था हो विवश, किन्तु,
लोहू–सनी जीत मुझे दीखती अशुद्ध है।

अथवा

(अ) सहनशीलता, क्षमा दया को
तभी पूजता जग है,
बल का दर्प चमकता उसके
पीछे जब जगमग है।

(ब) वेदना का अग्निकण जब
मोम से उर में गया बस
मृत्यु–अंजलि में दिया भर
विश्व में जीवन–सुधारस

अथवा

(ब) मेरा जीवन
यह क्षितिज बना धुँधला विराग
नव अरुण–अरुण मेरा सुहाग
छाया सी काया वीतराग
सुधि भीने स्वप्न रँगीले घन।

(क) शायद कल
टूटी बैसाखी पर चलकर
फिर मेरा खोया प्यार
वापस लौट आये।
शायद कल
प्रकाश स्तम्भों से टकराकर
फिर मेरी अन्धी आस्था
कोई गीत गाये।

अथवा

(क) जब भी
भूख से लड़ने
कोई खड़ा हो जाता है
सुन्दर दीखने लगता है।